Gi – यदि भाई या बहन पाप करे, जाओ और उनकी गलती बताओ मत्ती
१८:१५-३५ | 1

– Save This Page as a PDF–

यदि भाई या बहन पाप करे, जाओ और उनकी गलती बताओ मत्ती १८:१५-३५

खुदाई: यीशु किसे संबोधित कर रहे हैं? ये कैसा भाई है? किस वांछित परिणाम के लिए? इस सुलह प्रक्रिया में कौन से चार चरण शामिल हैं? कौन सी बाधाएँ इस प्रक्रिया को विफल करती हैं? इस प्रक्रिया में सहायता के लिए मसीह के अनुयायियों को क्या अधिकार दिया गया है? मसीहा के समय में अपराधियों को तीन गुना तक क्षमा किया गया था; चौथा अपराध माफ नहीं किया जाएगा । राज्य में क्षमा के बारे में येशुआ का उत्तर क्या कहता है? क्षमा न करने वाले सेवक का दृष्टांत क्षमा पर प्रभु की शिक्षा को कैसे समझाता है?

चिंतन: किसी के तुरंत “सार्वजनिक हो जाने” के कारण सुलह की इस प्रक्रिया का क्या होता है? किस बात ने आपके मन में क्षमा के महत्व को घर कर दिया है? हम कैसे माफ कर सकते हैं, फिर भी गैरजिम्मेदारी को बढ़ावा नहीं दे सकते? चूँकि ईश्वर ने यीशु के माध्यम से हमारा बहुत बड़ा ऋण माफ कर दिया है, तो क्या हमें आज अपने आस-पास के लोगों को माफ करने के लिए दयालु और तत्पर नहीं होना चाहिए? आप सुदूर अतीत के किसी व्यक्ति को कैसे माफ कर सकते हैं जिसने आपको गहरा आघात पहुँचाया है? क्षमा, स्वास्थ्य और पूर्णता के बीच क्या संबंध है? दूसरों के प्रति दयालु होने से इनकार करके, हम स्वयं से क्या इनकार करते हैं? क्या हम दूसरों को इसलिए क्षमा करते हैं ताकि प्रभु हमें क्षमा करें, या क्या प्रभु हमें क्षमा करते हैं ताकि हम क्षमाशील रवैया अपनाएं?

पिछली फ़ाइल में, मसीह ने विश्वासियों को एक-दूसरे के साथ शांति से रहने की आज्ञा दी थी (मरकुस ९:५० सीजेबी)। चूँकि यह अपरिहार्य है कि विश्वासियों के बीच विभाजन उत्पन्न होंगे, येशुआ अब बारहों को सिखाता है कि इन विभाजनों को कैसे समेटा जा सकता है ताकि परमेश्वर की मंडलियों की एकता न टूटे। मसीहा ऐसे सिद्धांत दे रहे थे जिनके द्वारा एक विश्वासी को दूसरे विश्वासी के साथ व्यवहार करना चाहिए जब कोई दूसरे से नाराज हो गया हो। यहां संदर्भ स्थानीय कलसिया या मसीहाई कलसिया का है, न कि प्राकृतिक पारिवारिक रिश्तों का।

Gi – यदि भाई या बहन पाप करे, जाओ और उनकी गलती बताओ मत्ती
१८:१५-३५ | 2



जब आपका भाई (एडेलफोस) या बहन आपके खिलाफ पाप
करता है, तो जाएं और आप दोनों के बीच उनकी गलती बताएं (मत्तीयाहू १८:१५ए)। भाई (एडेल्फ़ोस) शब्द का अर्थ या तो “एक ही गर्भ से” या प्रभु में भाई या बहन हो सकता है। यहां यह माना गया है कि स्थिति उस बिंदु तक पहुंच गई है जहां व्यक्तिगत अपराध को माफ नहीं किया गया है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि स्थिति का सामना विनम्रता की भावना से करना है। इससे समस्या न्यूनतम संभव स्तर पर रहती है, और गपशप से बचा जाता है क्योंकि नाराज व्यक्ति को अपराधी का सामना करने से पहले किसी और से बात नहीं करनी होती है। इसके अलावा, नाराज पक्ष समस्या के एक हिस्से के लिए अपनी स्वयं की दोषीता की खोज करने की शर्मिंदगी से बच सकता है, और फिर वापस जाकर उन सभी लोगों को उस खेदजनक तथ्य को समझाना होगा जो उन्होंने उस व्यक्ति का सामना करने से पहले अनुचित तरीके से किया था जिसने उन्हें नाराज कर दिया था!

विश्वासियों के लिए अनुशासन में चार चरण हैं, लेकिन पहले मैं यह कहना चाहूंगा कि आज हम जिस मुकदमेबाजी वाले समाज में रहते हैं, उसमें सदस्यों और आगंतुकों के बीच अंतर करना बुद्धिमानी होगी। किसी ऐसे व्यक्ति के साथ इस प्रक्रिया से गुज़रने की कोशिश करना जो आपके कलसिया या मसीहाई आराधनालय को अपना आध्यात्मिक घर नहीं मानता, अपने पड़ोसी के बच्चों को अनुशासित करने की कोशिश करने जैसा है। इससे सबसे अच्छी स्थिति में केवल बुरी भावनाएँ पैदा हो सकती हैं या सबसे खराब स्थिति में मुकदमा हो सकता है। जो गैर-सदस्य लगातार समस्याएँ पैदा करते हैं, उन्हें कहीं और उपस्थित होने के लिए कहा जा सकता है। और भले ही वे सदस्य हों, कई पूजा स्थल इस जानकारी को अपनी सदस्यता कक्षाओं में शामिल कर रहे हैं ताकि सदस्यता चाहने वाले लोगों को इस प्रक्रिया से सहमत होने का मौका मिल सके। कुछ चर्चों या मसीहाई आराधनालयों पर मुकदमा चलाया गया है और उनकी संपत्ति खो दी गई है क्योंकि उन्होंने किसी ऐसे व्यक्ति को अनुशासित करने की कोशिश की थी जो पहले से इस प्रक्रिया से सहमत नहीं था। मेरी विनम्र राय में आज के लिए यही समझदारी है।

सबसे पहले, आहत व्यक्ति निजी तौर पर अपराधी के पास जाता है (जलपान के दौरान नहीं)। यदि आप पहले ही किसी और से बात करते हैं, तो आप पहले ही सिद्धांत का उल्लंघन कर चुके हैं। यदि वे आपकी बात सुनते हैं और पर्याप्त समायोजन करते हैं, तो आपने उन्हें जीत लिया है (मती १८:१५बी)। यह हमेशा विचार करने योग्य प्रारंभिक

Gi – यदि भाई या बहन पाप करे, जाओ और उनकी गलती बताओ मत्ती
१८:१५-३५ | 3

कदम है। सबसे बढ़कर, एक दूसरे से गहरा प्रेम करो, क्योंकि प्रेम बहुत से पापों को ढांप देता है (पहला पतरस ४:८)। अगर सहमति बन जाती है तो रिश्ते की मरम्मत हो जाती है. लेकिन हो सकता है कि व्यक्ति आपकी बात न सुने, वह उस पाप को न देखे जिसके बारे में आप बात कर रहे हैं, या आपके निर्णय से असहमत हो सकता है। यदि कोई समझौता नहीं हुआ, तो आप सच्चाई कैसे जान सकते हैं? यदि यह कोई स्वाभाविक भाई या बहन होता तो आपको निजी तौर पर नहीं जाना पड़ता।

मसीहा का दूसरा कदम उस समस्या का बहुत ही व्यावहारिक और आध्यात्मिक तरीके से उत्तर देता है। लेकिन अगर वे नहीं सुनेंगे, तो टूटे रिश्ते को बहाल करने की कोशिश करने के लिए निजी तौर पर एक या दो अन्य लोगों को अपने साथ ले जाएं, ताकि हर मामला दो या तीन गवाहों की गवाही से स्थापित हो सके (मत्तीयाहू १८:१६) जैसा कि टोरा सिद्धांत में देखा गया है व्यवस्थाविवरण १९:१५। अब कुछ बाहरी सहायता का समय आ गया है। व्यावहारिक रूप से, यह सबसे अच्छा होगा यदि गवाह कलसिया या मसीहाई आराधनालय के आध्यात्मिक नेतृत्व से हों। वास्तव में, एक अयोग्य व्यक्ति या कोई ऐसा व्यक्ति जो असहमति में पक्ष लेगा, पूरी प्रक्रिया को बर्बाद कर सकता है। इसमें शामिल दो लोगों के अलावा किसी के साथ गपशप और आगे की जटिलताओं से बचने के लिए इसे अभी भी निजी रखा गया है। और एक या दो योग्य व्यक्ति स्थिति को हल करने की दिशा में कुछ वस्तुनिष्ठ जानकारी देने में सक्षम हो सकते हैं।

तीसरा, लेकिन अगर वे फिर भी सुनने से इनकार करते हैं, तो और भी गंभीर परिणाम होंगे। तब तक यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि वास्तव में दोनों लोगों के बीच क्या हुआ था। यह प्रत्येक पक्ष की व्यक्तिगत राय से परे चला गया है क्योंकि एक वस्तुनिष्ठ गवाह या गवाहों ने दोनों के बीच साक्ष्य और बातचीत का प्रार्थनापूर्वक मूल्यांकन किया है। इस बिंदु पर यह पुष्टि की जानी चाहिए कि वास्तव में एक व्यक्ति की ओर से पाप है। चूँकि यह सत्य व्यक्तिगत या समूह टकराव में प्राप्त नहीं हुआ था, अगला कदम कलसिया या मसीहाई आराधनालय को पापपूर्ण कार्य का विवरण बताना है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, मुझे लगता है कि केवल कलसिया या मसीहाई आराधनालय के सदस्यों को अनुशासित करना बुद्धिमानी है जिन्होंने स्वेच्छा से खुद को बड़े नेतृत्व के अधीन रखा है। इस बिंदु पर, अगर दोषी व्यक्ति विश्वासियों के बड़े समूह की बात सुनता है तो बहाली की संभावना अभी भी है। लेकिन हर कदम पुनर्स्थापना की आशा से उठाया जाता है, प्रतिशोध की नहीं. यहां संदर्भ व्यापक है और संकीर्ण नहीं है जैसा कि यदि यह आपके निकटतम परिवार में होता तो होता।

और चौथा, यदि वे कलसिया या मसीहाई आराधनालय की बात भी सुनने से इनकार करते हैं, तो उनके साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप एक मूर्तिपूजक या कर संग्रहकर्ता के साथ करते हैं (मती १८:१७)। यहूदी संदर्भ में, इसका मतलब यह होगा कि उन्हें मण्डली से बहिष्कृत कर दिया जाएगा और अछूत माना जाएगा। यह समझना महत्वपूर्ण है कि व्यक्तिगत मुक्ति के नुकसान का कोई संकेत नहीं है। वह व्यक्ति अभी भी मसीह में

Gi – यदि भाई या बहन पाप करे, जाओ और उनकी गलती बताओ मत्ती
१८:१५-३५ | 4

एक भाई या बहन है, हालाँकि, एक अपश्चातापी, पापी भाई या बहन है। इस बिंदु पर भी, व्यक्ति के उद्धार पर निर्णय नहीं होना चाहिए। ऐसी चीजें यहोवा पर छोड़ दी गई हैं। लेकिन अगर वे सुलह और पश्चाताप के सभी प्रयासों से इनकार करते हैं, तो उन्हें बुतपरस्त माना जाएगा। येशुआ के दर्शकों के लिए सबक स्पष्ट होगा। ऐसे व्यक्ति को बहिष्कृत कर दिया जाएगा और विश्वासियों की संगति से अलग कर दिया जाएगा। यह शेष झुंड को उनके बीच के खमीर से प्रभावित होने से बचाने के लिए है। अपराधी को उसके पाप की वास्तविकता का सामना कराना और पश्चाताप कराना भी आवश्यक हो सकता है। पश्चाताप के द्वार हमेशा खुले रहने चाहिए। यहां संदर्भ आपके तत्काल भौतिक परिवार का नहीं, बल्कि ईश्वर के आध्यात्मिक परिवार का है।

फरीसी यहूदी धर्म और आधुनिक रब्बी अदालतों में, बहिष्कार के तीन विशिष्ट स्तर हैं। पहले स्तर को हेजीफा कहा जाता है, जो केवल एक फटकार है जो सात से तीस दिनों तक चलती है और केवल अनुशासनात्मक होती है। इसे तब तक नहीं लिया जा सकता था जब तक कि तीन रब्बियों द्वारा इसका उच्चारण न किया जाए। वह बहिष्कार का निम्नतम स्तर था। हेजीफा का एक उदाहरण प्रथम तीमुथियुस ५:१ में पाया जाता है। दूसरे स्तर को निद्दुई कहा जाता है, जिसका अर्थ है बाहर फेंकना। यह कम से कम तीस दिन या उससे अधिक समय तक चलेगा और अनुशासनात्मक भी होगा। एक निद्दुई का उच्चारण दस रब्बियों को करना पड़ता था। इस दूसरे प्रकार का एक उदाहरण दूसरा थिस्सलुनीकियों ३:१४-१५ और तीतुस ३:१० में पाया जाता है। बहिष्कार के तीसरे और सबसे खराब स्तर को चेरेम कहा जाता है, जिसका अर्थ है विनाश के लिए समर्पित होना। यह तीसरा स्तर स्थायी था। इसका अर्थ है आराधनालय से बाहर होना, या मंदिर से बाहर कर दिया जाना और यहूदी समुदाय से अलग कर दिया जाना। शेष यहूदी चेरेम अभिशाप के तहत किसी को मृत मानते थे और उस व्यक्ति के साथ किसी भी तरह के रिश्ते का कोई संचार नहीं किया जा सकता था। यह तीसरा प्रकार प्रथम कुरिन्थियों ५:१-७ और मत्तित्याहू १८:१५-२० में पाया जाता है।

इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि इस स्थिति से निपटना बहुत कठिन है, यीशु आध्यात्मिक नेतृत्व करने वालों को एक विशेष वादा देते हैं। जो मध्यस्थ और परामर्शदाता इन संवेदनशील मुद्दों पर प्रभु का ज्ञान चाहते हैं, उन्हें आश्वासन दिया जाता है कि उनकी सहायता की जाएगी। हाँ! मैं तुमसे कहता हूं कि जो कुछ भी तुम पृथ्वी पर निषिद्ध करोगे वह स्वर्ग में निषिद्ध होगा, और जो कुछ तुम पृथ्वी पर अनुमति दोगे वह स्वर्ग में अनुमति दी जाएगी (१८:१८)। यह हमारी इच्छाओं के लिए कोरा चेक नहीं है और न ही इसका प्रार्थना से कोई संबंध है, जैसा कि कई लोग मानते हैं। जैसा कि मती १६ में है (देखें Fx – इस चट्टान पर मैं अपना कलसिया बनाऊंगा), हमें याद है कि शब्दावली रब्बी के निर्णयों को दर्शाती है, व्यक्तिगत अनुरोधों को नहीं। उदाहरण के लिए, तल्मूड एक दिन को उपवास का दिन घोषित करके बाध्य करने की बात करता है (ट्रैक्टेट टैनिट १२ए), इस प्रकार भोजन को निषिद्ध बना दिया जाता है। यहां ग्रीक पूर्ण काल इस तथ्य की ओर इशारा करता है कि जो कुछ भी स्वर्ग में

Gi – यदि भाई या बहन पाप करे, जाओ और उनकी गलती बताओ मत्ती
१८:१५-३५ | 5

पहले से ही प्रभु का निर्णय है वह पृथ्वी पर ईश्वरीय कलसिया नेतृत्व के सामने प्रकट होगा। क्या यह निषिद्ध है (हिब्रू: असुर) या अनुमति है (हिब्रू: मुतार)। यह अनुच्छेद कानूनी निर्णय लेने और हलाखा से संबंधित है, न कि प्रार्थना से। यहां मसीह के वादे के संदर्भ को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

यहां संदर्भ कलसिया या मसीहाई कलसिया अनुशासन का है, राक्षसी युद्ध का नहीं। राक्षसों को बांधना या प्रतिद्वंद्वी को बांधना संदर्भ में फिट नहीं होगा। (कानूनी रूप से) निषेध करने और (न्यायिक रूप से) अनुमति देने का अधिकार बारह प्रेरितों को दिया गया था। कलसिया या मसीहाई कलसिया को न्यायिक अर्थ में देखा जाता है, लेकिन प्रेरितों की डिग्री तक नहीं, क्योंकि वे मौत की सजा जारी कर सकते हैं (प्रेरितों ५:१-११)। कलसिया या मसीहाई कलसिया बहिष्कृत करने या न करने का चयन कर सकता है। वैसे, यदि आपका कोई परिचित है जो शैतान को अपने प्रार्थना जीवन में बांध रहा है, तो हमारे लिए एक बड़ी समस्या है। ऐसा लगता है जैसे कोई उसे जाने देता रहता है! मैं आपके पड़ोस के बारे में नहीं जानता, लेकिन मेरे पड़ोस में शैतान काफी सक्रिय है।

फिर, मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिये जो वे मांगें, एक मन हों, तो वह मेरे स्वर्गीय पिता की ओर से उनके लिये हो जाएगी (मती १८:१९)। संदर्भ से हटकर, लोग इसे प्रार्थना वादे के रूप में उपयोग करते हैं। वे प्रार्थना करते हैं और कहते हैं, “आइए हम एक साथ सहमत हों, और प्रभु इसे आशीर्वाद देंगे और यह हो जाएगा।” लेकिन यहां संदर्भ प्रार्थना के बारे में नहीं है; यह कलसिया अनुशासन के बारे में है। जो दो लोग सहमत हैं वे १८:१५-१७ में वही दो गवाह हैं, जो पापी का सामना कर रहे हैं। यह १८:१७बी में चरण चार के टकराव की व्याख्या कर रहा है। प्रथम कुरिन्थियों ५:१-७ में बहिष्करण की व्याख्या की गई है। उनके पाप की उन्हें कुछ कीमत चुकानी पड़ेगी। पापी को शरीर के विनाश, या शारीरिक मृत्यु के लिए शैतान के अधिकार के अधीन रखा जाता है। इससे मोक्ष पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। आम तौर पर किसी विश्वासी की मृत्यु पर शैतान का कोई अधिकार नहीं है। इसलिए जब एक विश्वासी मर जाता है (प्रथम थिस्सलुनीकियों ४:१३-१७), तो यह यीशु ही है जो उन्हें अपने साथ रहने के लिए घर ले जाता है। ग्रीक का शाब्दिक अर्थ है कि वे यीशु के माध्यम से या यीशु के कारण सोते हैं। लेकिन नियम का एक अपवाद है, एक बहिष्कृत विश्वासी। इसलिए कलसिया के कार्य, जिन्हें दो या तीन गवाहों द्वारा समर्थित किया गया था, स्वर्ग में मान्यता प्राप्त है और परमेश्वर प्राचीन सर्प को उस विश्वासी का जीवन लेने की अनुमति देते हैं। यही मत्ती १८:१९ का मुद्दा है, और, एक बार फिर, इसका प्रार्थना वादों से कोई लेना-देना नहीं है।

क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहां मैं उनके साथ होता हूं। (मत्ती १८:२०) यह स्थानीय कलसिया की परिभाषा नहीं है, जैसा कि कुछ लोगों ने माना है। एक स्थानीय कलसिया बड़ों या पर्यवेक्षकों के अधिकार में होता है। इसमें प्राधिकार की श्रृंखला के साथ एक संगठित निकाय है। यहाँ मुद्दा, एक बार

Gi – यदि भाई या बहन पाप करे, जाओ और उनकी गलती बताओ मत्ती
१८:१५-३५ | 6

फिर, कलसिया अनुशासन से संबंधित है। ये दो या तीन मत्तित्याहू १८:१५-१७ के वही दो गवाह हैं जो कलसिया को गवाही दे रहे हैं कि पापी ने पश्चाताप नहीं किया है। यदि उनकी गवाही वैध है, तो मसीह उनकी गवाही को मान्य करने वालों में से है। इसी तरह के वादे को दर्शाते हुए, तल्मूड कहता है, “यदि दो एक साथ बैठते हैं और टोरा के शब्द उनके बीच से गुजरते हैं, तो शेचिना उनके बीच रहता है (ट्रैक्टेट एवोट ३:२)। और ऐसा इसलिए है क्योंकि यीशु स्वयं उनकी गवाही को प्रमाणित कर रहे हैं, परमेश्वर पापी से अपनी सुरक्षा हटा सकते हैं। शैतान पापी को मौत की सज़ा दे सकता है।

तब पतरस यीशु के पास आया और पूछा: हे प्रभु, मैं अपने भाई या बहन को कितनी बार क्षमा करूंगा जो मेरे विरुद्ध पाप करता है? सात बार तक (मती १८:२१)? ध्यान दें कि उसने येशु से प्रार्थना, बुरी आत्माओं को रोकने या समृद्धि की अनुमति देने के बारे में नहीं पूछा! केफ़ा ने समझा कि यहाँ का सिद्धांत क्षमा और पुनर्स्थापन के मुख्य विषय से संबंधित है। वास्तव में उसने सोचा होगा कि वह यहाँ काफी उदार हो रहा है क्योंकि रब्बियों को तीन बार क्षमा करने की आवश्यकता होती है और उसके बाद एक व्यक्ति फिर से क्षमा करने के लिए बाध्य नहीं होता है (ट्रैक्टेट योमा ८६:२, जो आमोस १:२ पर एक रब्बी टिप्पणी है)।

हालाँकि, मसीहा ने एक बार फिर इस विषय पर वर्तमान विचार को सात बार नहीं, बल्कि सत्तर गुना सात बार (मत्तीयाहु १८:२२) विस्तारित किया। यह असीमित संख्या दर्शाती है कि ईश्वर की क्षमा असीमित है। संख्या सात को अक्सर बाइबिल के रूपक के रूप में पूर्णता की संख्या के रूप में उपयोग किया जाता है। (उत्पत्ति Ae – संख्या सात पर मेरी टिप्पणी देखें)।शायद येशुआ के मन में टोरा मार्ग था जो असीमित क्षमा के विपरीत, लेमेक के असीमित प्रतिशोध (उत्पत्ति ४:२४) की बात करता है। सच्ची क्षमा अपराधों की गिनती नहीं करती।

यह दृष्टांत इतना गंभीर है कि कई लोगों ने यह निष्कर्ष निकाला कि यीशु ने जो सिद्धांत सिखाया वह संभवतः विश्वासियों पर लागू नहीं हो सकता। लेकिन जैसे कभी- कभी माता-पिता के लिए लगातार अवज्ञाकारी बच्चे के साथ कठोरता से व्यवहार करना आवश्यक होता है, वैसे ही कभी-कभी प्रभु के लिए भी अपने लगातार अवज्ञाकारी बच्चों के साथ कठोरता से निपटना आवश्यक होता है। इब्रानियों के लेखक ने अपने पाठकों को यह याद दिलाया कि परमेश्वर ने लगभग एक हजार साल पहले अपने लोगों को क्या सिखाया था: क्योंकि प्रभु जिन्हें वह प्यार करता है उन्हें अनुशासित करता है और जिसे वह अपने बच्चे के रूप में स्वीकार करता है उसे कोड़े मारता है (इब्रानियों १२:६; नीतिवचन ३:१२ सीजेबी)। कुरिन्थियों में से कुछ विश्वासी इतने अनैतिक हो गए थे कि परमेश्वर ने उन्हें बीमार बिस्तर पर डाल दिया और कुछ को मरवा भी दिया (प्रथम कुरिन्थियों ११:३०)। रुआच हाकोडेश से झूठ बोलने के कारण उसने हनन्याह और सफीरा को मार डाला (प्रेरितों ५:१-१०)। परमेश्वर कभी-कभी अपने पापी बच्चों के प्रति सख्त होते हैं क्योंकि कभी-कभी यही एकमात्र तरीका है जिससे वह उनकी अवज्ञा को सुधार सकते हैं और अपने कलसिया की पवित्रता और पवित्रता की रक्षा कर सकते हैं।

Gi – यदि भाई या बहन पाप करे, जाओ और उनकी गलती बताओ मत्ती
१८:१५-३५ | 7

येशुआ ने दृष्टांत का परिचय देते हुए विशेष रूप से कहा कि यह स्वर्ग के राज्य के बारे में है, जिसकी सच्ची नागरिकता में केवल विश्वासी शामिल हैं। इतना ही नहीं, बल्कि वह इस कारण से दृष्टांत बताता है, यानी, मती १८:२१ में एक भाई को माफ करने के बारे में पतरस के सवाल के सीधे जवाब के रूप में, जो बदले में स्थानीय कलसिया या मसीहाई आराधनालय के भीतर अनुशासन के बारे में मसीह की शिक्षा का जवाब था। केफ़ा स्पष्ट रूप से एक विश्वासी था और मेरे भाई या बहन के बारे में उसका संदर्भ साथी विश्वासियों की ओर इशारा करता है, विशेष रूप से इस तथ्य के प्रकाश में कि मती १८ विश्वासियों पर ध्यान केंद्रित करता है, प्रभु के छोटे लोग जो उस पर विश्वास करते हैं (मती १८:६ और १०)। इसलिए, क्षमा न करने वाले सेवक के दृष्टांत का एक प्रमुख बिंदु विश्वासियों के लिए एक दूसरे को क्षमा करने की आवश्यकता है।

इस कारण से, स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है जो अपने सेवक से हिसाब चुकता करना चाहता था। जैसे ही उसने हिसाब-किताब शुरू किया, एक आदमी जिस पर दस हजार थैले सोना बकाया था, उसे उसके पास लाया गया (मत्ती १८:२३-२४)। यीशु अपने बच्चों या सेवकों की क्षमा के संबंध में ईश्वर के दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं, जिसे यहाँ राजा के रूप में चित्रित किया गया है। परमेश्वर के राज्य के नागरिक भी उसके स्वर्गीय परिवार के बच्चे हैं, और यह दृष्टांत उसे स्वामी, राजा और स्वर्गीय पिता दोनों का प्रतिनिधित्व करने की बात करता है। राजा राज्यपालों की नियुक्ति करता था जिनका प्राथमिक उत्तरदायित्व उसकी ओर से कर एकत्र करना था। संभवतः ऐसे करों के संबंध में राजा हिसाब-किताब करना चाहता था, और जिस व्यक्ति पर उसका दस हजार बैग सोना बकाया था, वह संभवतः कर-वसूली करने वाला अधिकारी था। किसी भी कीमत पर, वह एक बहुत ही ज़िम्मेदार व्यक्ति था जिस पर राजा का बहुत सारा धन बकाया था। यह अवसर शायद नियमित, आवधिक समय था जिसे राजा ने अपने राज्यपालों के साथ हिसाब-किताब तय करने के लिए स्थापित किया था। जिस तरह सात का सत्तर गुना (मती १८:२२) अनंत बार का प्रतिनिधित्व करता है, उसी तरह दस हजार बैग सोना एक असीमित राशि का प्रतिनिधित्व करता है।

चूँकि वह भुगतान करने में सक्षम नहीं था, स्वामी ने आदेश दिया कि उसे और उसकी पत्नी, उसके बच्चों और जो कुछ भी उसने किया था उसे कर्ज चुकाने के लिए बेच दिया जाए (मत्तीयाहु १८:२५)। ऐसा भुगतान आज हमें अजीब लगता है, लेकिन प्राचीन मध्य पूर्व में, यह एक यथार्थवादी विकल्प था। टोरा ने गिरमिटिया दासता को उन लोगों के लिए एक विकल्प के रूप में अनुमति दी जो अत्यधिक कर्ज में थे (निर्गमन Dz पर मेरी टिप्पणी देखें – यदि आप एक हिब्रू नौकर खरीदते हैं)। यह जीवन भर चलने वाली अपमानजनक गुलामी नहीं थी जो १८०० के दशक में अमेरिका में प्रचलित थी। यह दिवालियापन के लिए आवेदन करने का पुराने ढंग का तरीका था। हालाँकि कोई भी उस तरह से जीना नहीं चाहता था, अक्सर दास के साथ किराए के नौकर की तुलना में परिवार के सदस्य की तरह अधिक व्यवहार किया जाता था। जिम्मेदार व्यक्ति निश्चित रूप से अपना कर्ज चुकाने के लिए अपनी सेवा बेच देगा और चरम मामलों में, उसके परिवार को

Gi – यदि भाई या बहन पाप करे, जाओ और उनकी गलती बताओ मत्ती
१८:१५-३५ | 8

भी गुलाम बना लिया गया क्योंकि उन्हें उसकी संपत्ति माना जाता था।

अपने अक्षम्य अपराध को महसूस करते हुए और राजा की अच्छाई को महसूस करते हुए, नौकर उसके सामने घुटनों पर गिर गया। “मेरे साथ धैर्य रखें,” उसने विनती की, “और मैं सब कुछ चुका दूंगा” (मत्ती १८:२६)। यह वास्तव में असंभव था, लेकिन इस तथ्य ने उसे अपने कर्ज को चुकाने का मौका मांगने से नहीं रोका। वह वास्तव में अपना कर्ज चुकाने की निराशा को नहीं समझ पाया, लेकिन उसका दिल सही जगह पर था।

राजा जानता था कि, उसके अच्छे इरादों के बावजूद, नौकर कभी भी वह नहीं कर सकता जो उसने वादा किया था; परन्तु राजा ने उसकी मूर्खतापूर्ण और बेकार पेशकश के लिए उसकी आलोचना नहीं की। इसके बजाय, स्वामी ने उस पर दया की, कर्ज माफ कर दिया और उसे जाने दिया (मती १८:२७)। परमेश्वर पाप के ऋण के साथ यही करता है जब हम उसके पास आते हैं और क्षमा मांगते हैं (प्रथम यूहन्ना १:९)। ऐसा तब तक नहीं हुआ जब तक कि उड़ाऊ पुत्र जीवन की चरम सीमा तक नहीं पहुंच गया, तब तक उसे अपने मूर्खतापूर्ण तरीकों का सामना नहीं करना पड़ा। उसने बुतपरस्त देश में पूरी तरह से स्वार्थी जीवन जीने के लिए अपने पिता और परिवार से मुंह मोड़ लिया था। और जब उसका पैसा ख़त्म हो गया तो उसके नकली दोस्त भी ख़त्म हो गए। एकमात्र काम जो उसे मिल सका वह एक यहूदी के लिए सबसे अपमानजनक था – झुके हुए सूअर। सूअरबाड़े में रहते हुए उसे होश आया और उसने अपने आप से कहा: मेरे पिता के कितने नौकरों के पास अतिरिक्त भोजन है, और यहाँ मैं भूख से मर रहा हूँ! मैं चलूँगा और अपने पिता के पास लौट जाऊँगा और उनसे कहूँगा, “पिताजी, मैंने स्वर्ग और आपके विरुद्ध पाप किया है। मैं अब इस योग्य नहीं रहा कि आपका पुत्र कहलाऊं; मुझे अपने नौकरों में से एक की तरह बनाओ। परन्तु इससे पहले कि पुत्र अपके पिता से कुछ कह सके, वह अभी भी दूर था, उसके पिता ने उसे देखा, और उस पर तरस खाया; वह अपने बेटे के पास दौड़ा, उसके चारों ओर अपनी बाहें डालीं और उसे चूमा। पिता ने न तो उनकी आलोचना की और न ही उनके प्रस्ताव को स्वीकार किया। इसके बजाय, उसने अपने नौकरों से कहा: जल्दी करो! सबसे अच्छा वस्त्र लाओ और उसे पहनाओ। उसकी उंगली में अंगूठी और पैरों में सैंडल पहनाओ। पाला हुआ बछड़ा लाओ और मार डालो। आइए दावत करें और जश्न मनाएं। क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, फिर जीवित हो गया है; वह खो गया था और अब मिल गया है (लूका १५:११-२४)।

आगे क्या होता है, यह तब तक समझ से परे लगता है, जब तक हमें यह अहसास नहीं हो जाता कि हम बिल्कुल वैसा ही काम करने में सक्षम हैं। परन्तु जब वह सेवक बाहर गया, तो उसे अपने साथी सेवकों (या एक साथी विश्वासी) में से एक मिला, जिस पर उसका सौ चाँदी के सिक्के बकाया थे। ग्रीक एक सौ दीनार; येशुआ के दिनों में एक आम मजदूर के लिए सौ दिनों के श्रम का प्रतिनिधित्व किया गया। राजा को उस पर बकाया धन की असीमित राशि की तुलना में यह एक नगण्य राशि थी। हालाँकि तुलनात्मक रूप से दूसरा ऋण बहुत छोटा था, फिर भी यह एक वास्तविक अपराध का प्रतिनिधित्व करता था। मसीहा यह नहीं सिखा रहे थे कि साथी विश्वासियों के खिलाफ पाप महत्वहीन हैं, बल्कि वे उन

Gi – यदि भाई या बहन पाप करे, जाओ और उनकी गलती बताओ मत्ती
१८:१५-३५ | 9

अपराधों की तुलना में छोटे हैं जो हमने परमेश्वर के खिलाफ किए हैं और जिनके लिए उन्होंने हमें स्वतंत्र रूप से और पूरी तरह से माफ कर दिया है। लेकिन राजा की करुणा को याद करने के बजाय, उसने अपने साथी नौकर को पकड़ लिया और उसका गला घोंटना शुरू कर दिया। “तुम्हारा जो मुझ पर बकाया है, वह लौटा दो!” उसने मांग की (मत्तीयाहु १८:२८)।

उसका साथी नौकर भी घुटनों के बल गिर गया और बिल्कुल उन्हीं शब्दों के साथ अपनी विनती की, जैसे उस क्षमाहीन नौकर ने पहले राजा से कहा था, और उससे विनती की, “मेरे साथ धैर्य रखें, और मैं इसका बदला चुकाऊंगा” (मत्ती १८:२९) । लेकिन अकल्पनीय निर्दयता के साथ, क्षमा न करने वाले नौकर ने इनकार कर दिया। इसके बजाय, वह चला गया और अपने अधीनस्थ को तब तक जेल में डाल दिया जब तक कि वह कर्ज नहीं चुका सका (मती १८:३०)। राजा ने उसका असीमित कर्ज माफ कर दिया, लेकिन वह किसी ऐसे व्यक्ति को माफ करने को तैयार नहीं था जिसने उस पर इतनी छोटी रकम बकाया थी। यह दृष्टांत उस पापी शरीर का एक अप्रिय चित्रण है जो प्रत्येक विश्वासी के भीतर रहता है और जिसने कलसिया के जन्म के बाद से उसके भीतर बड़े संघर्ष और क्षति का कारण बना है (प्रेरितों २:१-४७)।

जब अन्य सेवकों ने देखा कि क्या हुआ था, तो वे क्रोधित हुए और जाकर अपने स्वामी को सब कुछ बता दिया जो कुछ हुआ था (मत्ती १८:३१)। जब कोई साथी विश्वासी क्षमा न कर रहा हो तो विश्वासियों को क्रोधित होना चाहिए। हृदय की कठोरता न केवल अपराधी को पाप में और गहराई तक ले जाती है, बल्कि परमेश्वर की सभाओं के भीतर असंतोष और विभाजन का कारण भी बनती है, दुनिया के सामने हमारी गवाही को धूमिल करती है, और स्वयं परमेश्वर को गहराई से दुखी करती है।

जैसा कि अपेक्षित था, जब राजा ने यह समाचार सुना तो क्रोधित हो गया और उसने क्षमा न करने वाले सेवक को अंदर बुलाया। “अरे दुष्ट सेवक,” उसने कहा, “तुमने मुझसे विनती की थी, इसलिए मैंने तुम्हारा वह सारा ऋण माफ कर दिया। क्या तुम्हें अपने साथी सेवक पर दया नहीं करनी चाहिए थी जैसी मैंने तुम पर की थी” (मत्ती १८:३२-३३)? जब कोई विश्वासी पाप को अपने दृष्टिकोण या कार्य को नियंत्रित करने की अनुमति देता है, तो वह दुष्ट हो रहा है, क्योंकि पाप हमेशा पाप होता है, और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई विश्वासी या अविश्वासी इसे करता है। क्षमा न करने का पाप कुछ मायनों में एक विश्वासी के लिए और भी अधिक दुष्ट होता है क्योंकि उनके पास इसका विरोध करने में मदद करने के लिए पवित्र आत्मा की शक्ति होती है। कोई व्यक्ति अपने सभी पापों, न चुकाए जाने वाले कर्ज के लिए ईश्वर की दया को कैसे स्वीकार कर सकता है, और फिर अपने प्रति किए गए किसी छोटे अपराध को कैसे माफ नहीं कर सकता?

इससे पहले, क्षमा न करने वाले सेवक की धैर्य की याचना ने राजा को दया और क्षमा की

Gi – यदि भाई या बहन पाप करे, जाओ और उनकी गलती बताओ मत्ती
१८:१५-३५ | 10

ओर प्रेरित किया था। लेकिन अब उस आदमी ने अपने साथी नौकर को माफ करने से इनकार कर दिया और राजा को कार्रवाई करनी पड़ी। क्रोध से क्रोधित होकर उसके स्वामी ने उसे यातना देने के लिए जेलरों को सौंप दिया (फाँसी नहीं दी गई), जब तक कि वह अपना सारा बकाया वापस न कर दे, अर्थात्, जब तक कि उसका हृदय परिवर्तन न हो जाए और वह अपने साथी नौकर का कर्ज़ माफ न कर दे (मती १८:३४) । जब विश्वासी ईश्वर द्वारा दी गई अपनी दिव्य क्षमा को भूल जाते हैं और साथी विश्वासियों को मानवीय क्षमा प्रदान करने से इनकार करते हैं, तो प्रभु उन्हें तनाव, कठिनाई, दबाव या अन्य कठिनाइयों जैसी यातनाओं के तहत डालते हैं (हमें याद रखना चाहिए कि दृष्टांत के विवरण को दबाया नहीं जा सकता है)। जब तक पाप कबूल न हो जाए और क्षमा न मिल जाए। जैसा कि याकूब हमें याद दिलाता है: जिसने कोई दया नहीं दिखाई है, उसके प्रति न्याय निर्दयी होगा (याकूब २:१३ एनएएसबी)।

फिर दृष्टान्त के मुख्य आध्यात्मिक बिन्दु पर प्रकाश डालना। येशुआ ने केफा और अन्य शिष्यों को उपदेश दिया: जब तक तुम अपने भाई या बहन को हृदय से क्षमा नहीं करोगे, मेरा स्वर्गीय पिता तुममें से प्रत्येक के साथ इसी प्रकार व्यवहार करेगा (मती १८:३५)। यीशु यहाँ उस क्षमा के बारे में बात नहीं कर रहे हैं जो मुक्ति लाती है, बल्कि यह कह रहे हैं कि ईश्वर केवल उन लोगों को बचाता है जो क्षमा कर रहे हैं। वह कार्य धार्मिकता होगी। वह लोगों द्वारा उसकी निःशुल्क कृपा का अनुभव करने के बाद एक-दूसरे को क्षमा करने की बात कर रहा है। जो लोग बच गए हैं और रुआच हाकोडेश में निवास करते हैं, वे आम तौर पर क्षमाशील रवैया अपनाकर उस बदले हुए जीवन को प्रदर्शित करेंगे (मती ६:१४-१५)। परन्तु ऐसे समय भी आयेंगे जब हम क्षमा न करने के पाप में पड़ जायेंगे और यह निर्देश उन्हीं समयों के लिए है।

जब कोई हमारे विरुद्ध ऐसा कुछ कहता या करता है जो अक्षम्य लगता है, तो प्रार्थना करना सहायक होता है, “एल शादाई, मुझमें क्षमा का हृदय डालो, ताकि मैं तुम्हारे साथ संगति कर सकूं और उस अनुशासन का अनुभव न करूं जो तब होता है जब तुम क्षमा नहीं करते हो।” मुझे क्योंकि मैं प्रभु में किसी भाई या बहन को माफ नहीं करूंगा। क्या मैं याद रख सकता हूँ कि जो कोई भी मेरे विरुद्ध पाप करता है, उसके लिए मैंने तेरे विरुद्ध अनगिनत बार पाप किया है, और तूने मुझे सदैव क्षमा किया है। मेरे किसी भी पाप के कारण कभी भी मुझे अपना अनन्त जीवन गँवाना नहीं पड़ा; इसलिए, किसी और के पाप के कारण उन्हें मेरे प्यार और मेरी दया से वंचित नहीं होना चाहिए।”